Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 4, Petersburg 1865

पर VS. Prât. 2, 27. pronom. Decl. gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. Vop. 3,9. abl. परस्मात् und परात्, loc. परस्मिन् und परे P.7,1,16. Vop.3,37. nom. pl. m. परे und परास् (ved. परासस्) P. 1,1,34. Schol. zu P.7,1,50. Vop. 3,12. mit कृतादि compon. gaṇa श्रेण्यादि zu P. 2,1,59. 1) adj. *a) weiterhin —, ferner gelegen, — stehend, entfernter, jenseitig* (mit dem abl., selten gen.); = दूर AK. 3,4,25,193. H. 1452. an. 2,435. Med. r. 56. Halâj. 4,8. Vaiǵ. beim Schol. zu Çiç. 2,29 und 16,6. परावाची तीरे AK. 1,2,3,8. H. 1079. Halâj. 3,45. सरय्वाश्च परे तीरे R. Gorr. 1,11,19. नद्याः परे पारे R. Schl. 2,55,6. नादृश्यत परः पारो नापरस्तत्र MBh. 2,1807. यो ऽस्माकमविद्यायाः परं पारं तारयसि Praçnop.6,8. P. 3,4,20. क्व स्विदस्य रजसो महस्परं क्वावरम् ṚV.1,168,6. आ समुद्रादवरादा परस्मात् 7,6,7. दिवः परे अर्धे 1,164,12. सन्नूर्देवेभिरवरैः परैश्च VS. 7,5. परमन्तं पृथिव्याः ṚV. 1,164,34. 7,99,2. पराः परावतः *fernste Fernen* 10,58,8. 145,4. 180,2. Ait. Br. 3,15. परं मृत्यो अनु परेहि पन्थाम् ṚV. 10,18,1. परस्या अधि संवतो ऽवराँ अभ्या तर 8,64,15. श्येनो हव्यं नयत्वा परस्मात् AV.3,3,4. 4,3,2. परं नेदीयो ऽवरं दवीयः 10,8,8. उपयामगृहीताक्का परेभ्यः VS. 5,42. Çat. Br. 3,5,1,31. 5,1,5,21. अयं च लोकः परश्च लोकः (vgl. परलोक) Çat. Br. 14,6,7,2. Kathop. 2,6. M.11,26. AK. 3,4,22 (28),16. के वै तस्य परे लोकाः MBh.2,2322. तेषां परतरे लोकाः 3,1108. 15459. अवरं परं च दंष्ट्रम् ṚV.10,87,3. शं ते परेभ्यो गात्रेभ्यः शमस्त्ववरेभ्यः VS. 23,44. म्लेच्छदेशस्त्वतः परः M. 2,23. उदासीनं तयोः परम् (विद्यात्) 7,158. AK. 2,8,1,9. 10. H. 732. अस्मात्परस्त्वेष महाधनुष्मान्पुत्रः कुलिन्दाधिपतेर्वरिष्ठः MBh.3,15594. अहं पारे समुद्रस्य पृथिव्या वा परं परात् । गत्वात्मानं विमुञ्चामि *in den entferntesten Winkel der Erde* 5,3745. अन्त्रेवाणु परेण णकारेण *mit dem weiter nach vorn stehenden, mit dem entfernteren* ण P. 1,1,69, Sch. परतर H. 732. येषां परा संख्या शतादिकात् *jenseits hundert u. s. w. gelegen, grösser als hundert u. s. w.* AK.3,2,13. H.1425. उषित्वा तत्र कौन्तेयः संवत्सरपराः समाः *über ein Jahr hinausgehend* MBh.1,7975. भागधेयप्तमतः परम् *was darüber hinausliegt, hängt vom Schicksal ab* Çâk. 92. परं विज्ञानात् *jenseits der Erkenntniss gelegen* Muṇḍ. Up. 2,2,1. परः कालः *die äusserste, späteste Zeit* Jâǵn. 1,37. परमायुः *das äusserste, höchste Lebensalter:* परमायुश्च भवति तदा वर्षाणि षोडश MBh.3,13056. परमायुः शतम् Sûrjas.1,21. Bhâg. P.3,11,12.16.32. VP.22. शतं हि तस्य (ब्रह्मणः) वर्षाणां परमित्यभिधीयते Mârk.P.46,42; vgl. परार्ध. — *b) vergangen, früher:* पितरः परासः ṚV. 4,2,16. परे युगे 1,166,13. तं पृच्छन्तो ऽवरासः पराणि 6,21,6. — *c) später, zukünftig, folgend, nachfolgend* (mit dem abl.); = उत्तर Med. परं परमायुः समश्नुते Çat. Br. 4,2,4,7. द्वादशावरान्दश परान्पुनाति *die vorangehenden und folgenden* Âçv. Gṛhj. 1,6. दश पूर्वान्परान्वंश्यानात्मानं चैकविंशकम् M. 3,37. P.3,3,138. वेद्भ्यहं परम् Kathâs. 39,109. कया वृत्त्या वर्तितं ते परं वयः Bhâg. P. 1,6,3. परां चैत्रीम् MBh. 14,2425. अहनि परे Kathâs. 42,1. परतरे चनाहन् ṚV. 10,95,1. श्रोष्यस्यस्मात्परम् Megh. 98. प्रतिपालयितव्यस्ते जन्मकालः — पञ्चवर्षशतात्परः MBh. 1,1090. अग्निसंस्कारात्परा क्रिया Ragh. 12,56. H. 789. Çat. Br. 4,1,1,13. 12,2,3,1. Çâṅkh. Çr. 1,14,24. Lâṭj. 2,3,8. Kâtj. Çr. 1,3,9. 23,4,18. M. 4,8. 8,121. 11,211. ṚV. Prât. 2,16. 9,18. VS. Prât. 4,47. 98. 101. P. 1,1,54. 6,1,84. AK. 2,6,2,30. 3,4,29.227. Trik. 3,3,463. (उपसर्गाः) छन्दसि परे ऽपि *nachfolgend, hinter dem Verbum stehend* P. 1,4,81. अचो ऽन्त्यात्परः 1,47. AK. 2,6,2,49. 3,6,3,26. H. 247. उपेन्द्रवज्राचरणेषु सन्ति चेद्उपान्त्यवर्णा लघवः परे कृताः so v. a. *hinzugefügt* Çrut. 33. आद्याद्यस्य गुणं त्वेषामवाप्नोति परः परः *jeder folgende* M. 1,20. subst. am Ende eines adj. comp. *ein nachfolgender Laut:* विसर्जनीयः — स्वरघोषवत्परः ṚV. Prât. 1,17. दीर्घ° 2,10. तपर *worauf ein* त *folgt* P.1,1,70. 2,40. 4,62. Schol. zu P. 1,1,51. तपरकरणम् Schol. zu P. 6,1,4. Ausnahmsweise verbindet sich पर als adj. mit seiner Ergänzung zum comp.: षष्ठकपरास्ततो वर्णाः पञ्च *fünf auf die 6te Silbe folgende Silben* Çrut. (Br.) 40. प्रोष्ठभद्रपरः पदः H. 154. — *d) der vorzüglichere, bessere, trefflichere, der vorzüglichste, beste, trefflichste, äusserste, ärgste, summus;* = उत्तम, श्रेष्ठ, मुख्य AK. 3,4,25,193. H.1439. H. an. Med. Halâj. 4,4. Vaiǵ. a. a. O. परे ऽवरे मध्यमासः ṚV.4,25,8. असुं परं जनयन् 1,140,8. नामन् 10,5,2. VS. 10,20. यस्मान्न जातः परो अन्यो अस्ति 8,36. AV. 5,24,15. 6,117,3. 7,35,3. 10,7,31. 18,2,32. अवरं हि राज्यं परं साम्राज्यम् Çat. Br. 5,1,1,13. 3,11. 1,9,3,10. 9,1,1,29. 14,9,4,11. पुरुषस्य च यः परः (महादेवः) MBh.13,592. न तस्मात्परमस्ति वै 2114. 14,2783. मत्परं नाधिगम्यते Matsjop.50. इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः । मनसस्तु परा बुद्धिः Bhag. 3,42. Çâk. 186. नाहं वेद परं ह्यस्मिन्नापरं न समम् Bhâg. P. 2,5,6. अपरेषां परेषां च परेभ्यश्चापि ये परे MBh.13,3037; vgl. 2134, wo st. परे ऽपरे gedruckt ist. वेत्थ धर्मं सत्यवति परं चापरमेव च MBh. 1,4258. ब्रह्मन् Bhâg. P. 2,4,10. Prab. 2,9. स्थान MBh. 13,1870. रूप N. 12,52. परमपरं चेति द्विविधं सामान्यम् Tarkas. 4. 56. Kap. 1,87. किमिह परम् Tattvas. 2. तं प्रतिजग्राह पूजया परया N. 21,19. जव 21,19. मुद् 19,29. संभ्रम R. 1,63,27. यत्न N.1,6. 19,29. तुष्टि Sund.4,2. निःश्रेयस M.1,106. निर्वृति Pańkat.5,9. विषाद Hit. 42,10. कौतूहल R. 1,1,7. व्रीडा 80. आपद् M. 9,313. परः संनिकर्षः संहिता P.1,4,109. किं नु दुःखमतः परम् Spr. 935. compar.: अन्नमेव विशिष्टं हि यस्मात्परतरं न च MBh.3,13386. 15534. 13,602. 3797. 14,2783. Bhag. 7,7. Jâǵn. 1,322. Kâm. Nîtis. 5,47. Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,18. ब्रह्मन् n. Spr. नन्वात्मन्यव°. पर m. oder n. *der höchste Geist, die Weltseele, das Absolutum;* परः = परमात्मन् Vaiǵ. a. a. O. परम् = कैवल्यम् = अमृतम् Ratnâv. im ÇKDr. ब्रह्मविदाप्नोति परम् Taitt.Up.2,1. Bhag.3,19. यान्ति ते परम् 13,34. Bhâg.P.3,6,5. 9,2,15. 22,37. कालं पराख्यम् 3,32,9. नरदेवं पराख्यम् 1,18,42. परमाख्यं परं यच्च त्वमेव परिगोयसे R.6,102,29. n. *Höhepunkt:* सर्वे बुद्धेः परं गताः MBh. 1,2025. ज्योतिषे च परं गतः 13,470. 4680. पर als n. häufig am Ende eines adj. comp. (f. आ) *dieses als Höchstes habend* so v. a. *ganz damit beschäftigt, ganz darin aufgehend:* शौचपर M. 3,192. आम्नाय° 7,80. देवताभ्यर्चन° N. 12,58. चिन्ता° 2,2. MBh.5,7010. R. 1,43,7. ध्यानयोग° Bhag. 18,52. N. 2,3. भर्तृशोक° 12,74. दोष° MBh. 1,1200. धर्म° R. 1,6,2. करुणा° Bhartṛ. 2,63. H. 368. परिचर्या° Ragh. 1,91. Kathâs. 43,60. धारासारोपनयन° Vikr. 76. अहंकार° Prab.14,2. स्वभर्तृशुश्रूषा° Çuk.41,3. विनय° 42,4. शान्ति° Dhûrtas. 96,10. कुलमार्ग° Spr. 705. परेङ्गितज्ञान° 463, v. l. याञ्चा° H.860. सुख° *überaus glücklich, — froh* Çâk.162, v.l. उपभोगपरानर्थान् *vor Allem zum Genuss bestimmt* Haeb. Anth. 223, Çl. 73. nom. abstr.: विषयावपातपरता Râǵa-Tar. 5,377. — *e) fremd, ein Fremder, ein Anderer* (im Gegens. zum *eigenen Selbst*); *feindlich, Feind* (Gegens. अवर, अन्तर, आत्मन्, स्वयम्, स्व, निज); = अनात्मन् AK. 3,4,25,193. = अन्य H. an.

Institute of Indology & Tamil Studies, Cologne University, Germany 9.2.2007